अहले–सुन्नत वल जमाअत के सिद्धान्त

[*हिन्दी*]

أصول أهل السنة والجماعة

[اللغة الهندية]

लेख

शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अल–उसैमीन रहिमहुल्लाह

فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة بمدينة الرياض

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1430 - 2009

islamhouse.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और अत्यन्त दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

हर प्रकार की प्रशंसा सर्व जगत के पालनहार अल्लाह तआला के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की कृपा एंव शांति अवतरित हो अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद पर, तथा आप के साथियों, आप की संतान और आप के मानने वालों पर।

अक़ीदा तथा धर्म के अन्य मामलों में अहले-सुन्नत वल जमाअत के उसूल और सिद्धान्त क्या हैं? इसके विषय में सऊदी अरब के एक महा विद्वान मुहम्मद बिन सालेह बिन उसैमीन रहिमहुल्लाह से पूछा गया यह एक प्रश्न हैं जो पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा हैं, आशा है कि यह फत्वा अक़ीदा तथा अन्य धार्मिक मामलों में अहले सुन्नत वल जमाअत के सिद्धान्त और दस्तूर की जानकारी प्राप्त करने और उन्हें अपनाने में लाभदायक सिद्ध होगा। (अ.र.)

अहले–सुन्नत वल जमाअत के सिद्धान्त

प्रश्न :

अक़ीदा तथा धर्म के अन्य मामलों में अहले सुन्नत वल जमाअत के क्या उसूल (सिद्धान्त) हैं?

उत्तर :

अक़ाइद तथा अन्य धार्मिक मामलों में अहले सुन्नत वल जमाअत का दस्तूर (सिद्धान्त) यह है कि अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत को, तथा खुलफ़ा-ए-राशिदीन जिस सुन्नत और तरीक़े पर क़ायम थे, उसे दृढ़ता से थाम लिया जाए, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ﴾ (سورة آل عمران: ٣١)

"कह दीजिए, यदि तुम अल्लाह तआला से महब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, (स्वयं) अल्लाह तआला तुम से महब्बत करेगा।" (सूरत-आल इम्रान :३१)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿مَّنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَن تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا﴾ (سورة النساء: ٨٠)

“जो व्यक्ति रसूल की फरमांबरदारी करेगा उसने अल्लाह की फरमांबरदारी की, और जिस ने पीठ फेरा, तो हम ने (ऐ पैग़म्बर!) आप को उन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा है। (सूरतुन्निसा :८०)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا﴾ (سورة الحشر:٧)

“और रसूल जो कुछ तुम्हें दें उसे ले लो, और जिस चीज़ से रोक दें उस से रूक जाओ।” (सूरतुल हश्र :७)

यह आयत अगरचे गनीमत के माल के वितरण के बारे में अवतरित हुई किन्तु शरई मामलों में इस का और अधिक एतिबार है।

तथा इसलिए भी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमुआ के दिन खुत्बा देते तो आप फरमाते :

“हम्द व सलात के बाद ! सर्व श्रेष्ठ बात अल्लाह की किताब है, और सर्व श्रेष्ठ तरीक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है, और बदतरीन चीजें वह हैं जो दीन में नयी गढ़ (ईजाद कर) ली गई हों, और दीन में गढ़ ली गई हर चीज़ बिदअत है, और हर बिदअत गुमराही है।” (मुस्लिम हदीस नंबर :८६७)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

“तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो, उसे दृढ़ता से थाम लो और दाँतों से जकड़ लो, और (दीन में) नये-नये (ईजाद कर लिए गए) कामों से बचो, क्योंकि (दीन में ईजाद कर लिया गया) हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।” (अबूदाऊद हदीस नंबर :४६०७)

इस विषय में (क़ुरआन और हदीस के) और बहुत से नुसूस हैं।

अतः अहले सुन्नत वल जमाअत का तरीक़ा और दस्तूर अल्लाह की किताब, उसके रसूल की सुन्नत, तथा आप के बाद हिदायत याफ्ता खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को सम्पूर्ण रूप से अपनाना है। उसी में से यह भी है कि अहले सुन्नत वल जमाअत अल्लाह के निम्नलिखित फरमान पर अमल करते हुए दीन को क़ायम करते हैं और उसमें मतभेद नहीं डालते :

﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ﴾ (سورة الشورى: ١٣)

''उस ने तुम्हारे लिए धर्म का वही रास्ता निर्धारित किया है जिस को अपनाने का नूह को आदेश दिया था और जिसकी (ऐ मुहम्मद!) हम ने आप की ओर वह्य भेजी है और जिसका इब्राहीम, मूसा और ईसा को हुक्म दिया था (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना।'' (सूरतुश्शूरा :13)

अहले सुन्नत वल जमाअत के बीच अगरचे ऐसी चीज़ों में मतभेद पैदा हुआ (या हो जाता) है जिन में इज्तिहाद की गुन्जाइश है, किन्तु इज्तिहादी मसाइल में यह मतभेद उनके दिलों के अन्दर मतभेद और इख़्तिलाफ का कारण नहीं बनता, बल्कि आप उन्हें आपस में एकजुट और एक दूसरे से प्रेम व्यवहार रखने वाला पाएंगे।

(फतावा अरकानुल इस्लाम, लेखक :मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह, पृष्ठ :19-20)

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
*atazia75@gmail.com